हमारा पयाम

और अहदे इमामे जाफ़र सादिक़ (अ०)

आयतुल्लाह शहीद बाक़िरुस्सद्र अलैहिर्रहमा
अनुवादकः मौलाना सैय्यद रज़ी जाफर साहब क़िब्ला

इमामे जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम के ज़माने की याद मनाने में हमारे लिए ख़ास तौर से हिदायत व रहनुमाई का सामान मौजूद है, क्योंकि जिस दौर में हम ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं वह बहुत सी बातों में इमामे (अ0) के ज़माने से मेल खाता है इसलिए हम जो उनकी याद मनाते हैं.........तो यह सिर्फ उनकी मुहब्बत व विलायत, उनकी अज़ीमुश्शान तालीमात से जुड़े रहना और उनके बुज़ुर्ग बाप–दादा अलैहिमुस्सलाम की हिदायात के बारे में अहद की तजदीद ही नहीं है........बल्कि. ....इससे हमारे ज़हनों में इमाम (अ0) की उस सख़्त जंग की याद भी ताज़ा हो जाती है........जो इस्लाम को दुश्मनों के हमले से बचाने और उसकी पाकीज़गी व ताबनाकी को महफ़ूज़ रखने के लिए थी..........!

इसलिए ज़रूरी है कि ....हम इस तरह यह याद मनाएँ जो दुश्मनाने इस्लाम और फिर जाने वाले लोगों से दीन के लिए मुक़ाबला और जंग में जोश व जज़्बा पैदा करे।

हज़रत इमामे जाफर सादिक़ (अ0) ने जिस ज़माने में ज़िन्दगी गुज़ारी, वह ऐसा ख़तरनाक और ज़ाती ख्वाहिशात के टकराव का तूफानी दौर था जिसने इस्लामी समाज को उलट–पलट करके तरह–तरह के झगड़ों और लड़ाइयों में झोंक दिया था और गुमराही वाले ख़यालात ने कुछ मुसलमानों के ज़हनों तक इस तरह पहुँच हासिल कर ली थी कि इस्लाम और उसकी अज़ीमुश्शान तालीमात के बारे में उनके ज़हन शक में पड़े हुए थे।

इस्लाम के दुश्मन और इस्लामी हलक़ों में घुसे हुए (मुनाफ़िक़).........लोगों ने, मुसलमानों के जंग व जिदाल, परेशानी की हालत, आपसी झगड़े और क़ौमी बिगाड़ से ग़लत फाएदा उठाते हुए उनके दरमियान, ग़ैर इस्लामी फिक्रें और नये–नये ख़यालात को फैलाया...........और बिना सोंचे समझे, (उस वक़्त के) मुसलमान इन तमाम बातों को क़बूल करते चले गए जिसकी वजह से उनके दरमियान वबाई मर्ज़ की तरह शक फैला और यह एक ऐसी बिदअत हो गई कि आलिम नुमा लोगों ने इसको बढ़ावा दिया, इसका चर्चा फैलाया और इसके ज़रिए से सस्ती शोहरत हासिल करने की कोशिश की।

इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) ने इस पुरआशोब दौर में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बुराइयों, बिदअतों और हवा व हवस से भरा हुआ था, दीनी जिहाद की ज़िम्मेदारी उठायी और जब तक उस ज़माने के ज़ालिमों ने...........आपकी ज़िन्दगी की शमा न बुझा दी, आप (अ0) दिलेरी और मर्दानगी के साथ जिहाद के मैदान में डटे रहे।

आप (अ0) ने अपने ज़माने के सरकश ख़ोलफ़ा, रियासत के वाली और इक़्तेदार वाले लोगों से मुक़ाबला किया। आप (अ0) ने उन लोगों को जब इस्लामी अहकाम में बदलाव, रिआया पर ज़ुल्म और क़ौम की मुक़द्दस चीज़ों का मज़ाक़ उड़ाते हुए देखा और यह महसूस किया

कि वह अपने कामों और किरदार में किसी तरह की ज़िम्मेदारी का एहसास नहीं करते तो आप (अ0) ने उन लोगों के मुक़ाबले में बिलकुल सख़्त अन्दाज़ अपनाया, बुलन्द आवाज़ से टोका........ और मिल्लते मुस्लिमा को इस्लाम की अज़ीमुश्शान तालीमात और अच्छाइयों का हुक्म करने और बुराइयों से रोकने का फ़रीज़ा याद दिलाया ताकि उस ज़माने के ज़ालिम हाकिमों को ध्यान दिलाया जाए कि क़ौम जाग रही है और निगरानी का काम चल रहा है।

दीने इस्लाम के बारे में जो नासमझी एख़्तियार की जा रही थी, दुनियावी ज़िन्दगी से अलग–थलग रहने, काम के मैदान से भागने और लज़्ज़तों और खुशियों से मुँह मोड़ने ही को सच्चा दीन क़रार दिया जा रहा था। इमाम (अ0) ने इसकी भी मुख़ालेफत की।

हदीस की किताबों में महफ़ूज़ है कि आप (अ0) ने अपने अज़ीमुश्शान बयानों में, दुनियावी ज़िन्दगी के बारे में इस्लाम का तरीक़ा साफ किया कि उसने काम की ताकीद की है और खुदावन्दे आलम की तरफ से तैय की हुई हदों के अन्दर दुनियावी फायदों से मज़ा लेने की इजाज़त दी है।

इस तरह उस ज़माने में शिर्क और बेदीनी की जो तहरीकें उभर रहीं थीं, जिनको इस्लाम के दुश्मन, मुसलमानों की सफों में इसलिए फैला रहे थे कि उनको कमज़ोर करें, और ....उन पर ज़ोर व हुकूमत हासिल करने के लिए उनकी ज़िन्दगी को इस्लाम से दूर कर दें।

उनके मुक़ाबले पर भी इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) ने ही इस्लाम के झण्डे को बुलन्द किया, आप (अ0) अहले बातिल के ख़ात्मे के लिए उठे। फलसफी..........दहरियों, मुतकल्लिमीन......और....... अस्हाबे राए से मुनाज़रा किया।

यह वह लोग थे............जिनके ज़हनों में सबसे बड़ा मक़सद यह था कि मुसलमानों को गुमराह करें और उनके अक़ीदों में शक डालें.... लेकिन इमाम (अ0) ने हकीमाना अन्दाज़ से उनके बुरे ख़यालों और बेबुनियाद बातों को साफ कर दिया, उनके इरादे की बुराई और उनके रास्तों की परेशानी उनके सामने कर दी। उन्हें हक़ बात की तरफ दावत दी और बहुत ही ख़ूबसूरत तरीक़े से उनसे मुनाज़रा किया।

इन टेढ़ी रफ़्तार वाले और गुमराह लोगों के साथ मुनाज़रों की ज़ियादती की कहानी तारीख़ की किताबों में महफ़ूज़ है।

और इमाम (अ0) ने इमामते कुबरा और इलाही ख़िलाफत की ज़िम्मेदारियाँ सम्भालने के साथ जो कि इस्लामी क़ानून बनाने का माख़ज़ है, अपने साथियों और चुने हुए शागिर्दों को, उनकी क़ाबलियत और ताक़त के लिहाज़ से, फिक्री जंगों में मुक़ाबले और इस्लाम के दुश्मनों और मुनाफिक़ों की तरफ से उठाए हुए तूफानों का रास्ता बन्द करने के लिए भेजा।

यह लोग इस फिक्री जिहाद में बेहतरीन मुआविन और मददगार साबित हुए जिसका इमाम (अ0) ने बेड़ा उठा रखा था। और हक़ीक़त यह है कि.........अक़ीदे के मैदान में आपके चुने–चुने साथी (और चुने हुए शार्गिदों) ने जो कारनामे अन्जाम दिये उनकी शुरुआत और अन्जाम आप (अ0) ही की ज़ात है।

हज़रत इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) ने (बातिल ताक़तों से) मुक़ाबले और कोशिश की जो ज़िम्मेदारी सम्भाली थी उसके कुछ रुख हैं जो हमारे लिए तहरीक की हैसियत रखते हैं ताकि मौजूदा ज़माने में इस्लाम के लिए हम दीन के दुश्मनों और गुमराह ताक़तों से बराबर जिहाद पर कमर बाँधे रहें।

क्योंकि इस ज़माने में बाहर से आए हुए

अक़ीदे और ख़यालात की जिस बीमारी का हमें सामना करना पड़ रहा है उसने इस्लाम और मुसलमानों के वजूद को चैलेंज कर रखा है। अब यह बात किसी दलील की मोहताज नहीं रही कि आज–कल के मुसलमानों को अक़ीदे और ख़यालों के ऐसे तूफ़ानों का सामना है जो इस्लाम के बिलकुल ख़िलाफ है, और जिनके पीछे इस्लाम के दुश्मनों का यह मक़सद छुपा हुआ है कि .... वह पक्का अक़ीदा जो मुसलमानों को शिकस्त और हार, तबाही व बर्बादी से बचा सकता है, उनके (दिल व दिमाग़ से) निकाल दिया जाए।

मुसलमानों के कुछ इलाक़ों में इन अजनबी फ़िक्रों और ख़यालों के फैलने की वजह से, आज कल मुसलमानों के अक़ीदों में जो कमज़ोरी ज़ाहिर हुई है इसकी खुली निशानियाँ इस्लामी ज़िन्दगी में सामने आने लगी हैं। बहुत से मुसलमानों की ज़िन्दगी में............इस्लाम का सिर्फ नाम बाक़ी रह गया है, जिसका अमली ज़िन्दगी और किरदार के लेहाज़ से कोई ताल्लुक़ बाक़ी नहीं रहा, वह नाम जिसका अगर कोई असर मुसलमानों की इबादत में बाक़ी भी रह गया है.............तो अपने दीनी भाईयों से ताल्लुक़ात, दीन के दुश्मनों की हरकतोंपर नज़र रखने और ज़िन्दगी के बड़े–बड़े मसाएल के सिलसिले में इसका कोई असर दिखाई नहीं देता।

अक़ीदे की इस कमज़ोरी ने, गुमराही के ख़ायालात को बहुत से मुसलमान हलक़ों में फलने फूलने का ख़ूब मौक़ा दिया। क्योंकि इसका खुला हुआ असर यह होता है कि ....उन इस्लामी अक़दार से दूरी एख़्तियार कर ली जाए जो हयात, काएनात, इन्सान और उसके मसाएल के बारे में मुसलमानों के ख़याल की असास व बुनियाद हैं।

और इस्लाम के दुश्मनों को, इस्लामी मुल्कों में जो सियासी और फौजी इक़्तेदार हासिल हुआ इससे फाएदा उठाते हुए वह यहाँ के लोगों को इस्लाम की तालीमात, उसूल व क़वाएद और क़ानून व अक़दार से दूर करने और इस्लामी ज़िन्दगी का रुख़ ऐसे अफ्कार व ख़यालात के तरफ फेरने में कामियाब हो गए जिनका न इस्लाम से कोई ताल्लुक़ था और न वह इस्लाम के साथ एक मन्ज़िल पर जमा हो सकते थे!!

जिसका नतीजा यह निकला कि मुसलमानों का इस्लाम से जो मज़बूत रिश्ता थावह टूट गया और उनकी रोज़ाना की ज़िन्दगी पर इसका कोई साया भी बाक़ी न रहा और सच्चे इस्लामी अक़ीदे से यह महरूमी एक वबा बन गयी। (जो हर तरफ फैलती चली गयी)

यह है वह सूरते हाल, जिसमें आलमे इस्लाम ज़िन्दगी गुज़ार रहा है और यह उस सूरते हाल से बहुत मिलता है जो इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) के ज़माने में पैदा हो गई थी जिसको बदलने और सही इस्लामी माहोल पैदा करने के लिए....... इमाम (अ0) ने मुसलसल कोशिश की।

हज़रत इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) और उनके बाप–दादा तैय्यबीन व ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम ने उन तमाम लोगों के लिए जो उनके बाद, ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करें, ख़ुदावन्दे आलम की तरफ दावत देने का रास्ता साफ कर दिया जो ख़ालिस इस्लामी और इन्सानी रास्ता है जो अकेला भी है, बेमिसाल भी, जिसका बयान क़ुर्आन में मौजूद है :

''अपने परवरदिगार की तरफ, हिकमत और अच्छी नसीहत के ज़रिए बुलाओ और (लोगों से) बेहतरीन अन्दाज़ में बहस करो।''

और ख़ुदावन्दे आलम की मदद व नुसरत से हम उन्हीं के निशाने क़दम पर चलने की कोशिश कर रहे हैं।

□□□